शनि ग्रह की पौराणिक कथा

शनिदेव का जन्म ज्येष्ठ माह की अमावस्या को हुआ था। इनके पिता सूर्य और माता का नाम छाया (संवर्णा) है। पौराणिक ग्रन्थों में शनिदेव के जीवन में प्रकाश डालने वाली अनेकों कथाएं मिलती है, जैसे ब्रह्मपुराण के अनुसार शनिदेव का बालपन से ही भगवान श्री कृष्ण के प्रति बहुत अधिक अनुराग था, इसलिए शनिदेव भगवान श्री कृष्ण के परमभक्त भी हुए। एक कहावत है कि **"मिट्टी के कच्चे घड़े में जो निशान बन जाए, वे अन्त समय तक रहते हैं,"** युवावस्था जो व्यक्ति को काम की ओर खींचती है, उस अवस्था में आकर भी शनिदेव श्री कृष्ण की भक्ति में मगन रहा करते थे। शनिदेव के वयस्क होने पर उनका विवाह संस्कार चित्ररथ की कन्या से हुआ, उनकी पत्नी ईश्वर के प्रति निष्ठावान और बहुत तेजस्विनी थी। एक बार पुत्र प्राप्ति की कामना से वह ऋतु स्नान के बाद श्रृंगार आदि करके रात्रि के समय शनिदेव के पास गयी, पर शनिदेव उस समय श्री कृष्ण के ध्यान में इस तरह मगन थे कि पत्नी के लाख प्रयत्न करने पर भी शनिदेव ने पत्नी की ओर नही देखा, तो काम के आवेग में आकर शनिदेव को उनकी पत्नी ने शाप दे दिया, कि आज के बाद उनकी पूर्ण दृष्टि संकट, कष्ट और विच्छेद का कारण बनेगी। जब शनिदेव का ध्यान टूटा और उन्होंने अपनी पत्नी को मनाया तो पत्नी को भी अपनी भूल पर बहुत पश्चाताप हुआ, पर होनी को कौन टाल सकता है। उसी समय से शनिदेव की दृष्टि को कष्ट का कारक माना गया है, तभी से शनिदेव अपनी दृष्टि नीचे करके रखते हैं। शनिदेव की इसी शापग्रस्त दृष्टि का प्रभाव एक अन्य पौराणिक कथा में भी नजर आता है। कल्पान्तर में जब भगवान श्री कृष्ण ने श्री गणेश के रूप में भगवान शिव और माता पार्वती के यहां अवतार लिया, तो पूरा कैलाश पर्वत क्षेत्र आनन्दमय वातावरण और उत्साह से भर गया। सभी देवी और देवता आशीर्वाद देनें और मंगलकामना के लिए कैलाश पर्वत पहुचें, जिसमें शनिदेव भी शामिल थे। शनिदेव को अपनी पत्नी का शाप याद था, इसलिए उन्होंने नवजात शिशु को बिना देखे ही आशीर्वाद दे दिया। शनिदेव का इस प्रकार आशीर्वाद देना माता पार्वती को ठीक न लगा, उन्होंने इस प्रकार के

आचरण का कारण पूछा, तब शनिदेव ने सारी बात बताकर अपनी विवशता बताई, जिसे सुनकर माता पार्वती ने कहा, कोई भी शाप मेरे बालक का अहित नही कर सकता और शनिदेव को नवजात शिशु पर पूर्ण दृष्टि गोचर करके आशीर्वाद देने का आदेश दिया। पार्वती माता के आदेशानुसार शनिदेव ने जैसे ही नवजात शिशु पर दृष्टि डाली उसी समय नवजात शिशु का सिर धड़ से अलग हो गया। सिर रहित पुत्र को देखकर माता पार्वती मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी और पूरे कैलाश पर शोक की लहर दौड़ पड़ी। आगे कथा मिलती है कि भगवान विष्णु ने हाथी का सिर लगाकर बालक को फिर से जीवित कर दिया, तभी से नवजात शिशु का एक नाम गजानन (गज माने हाथी आनन माने मुख) पड़ गया, जिसे माता पार्वती ने स्वीकार कर लिया, पर क्रोध के आवेग में आकर शनिदेव को शाप दे दिया। वहां उपस्थित सभी देवी देवताओं ने माता पार्वती को शनिदेव के विवश होने की बात याद दिलाई, जिसे माता पार्वती पहले ही जानती थी और माता पार्वती को याद आया कि शनिदेव ने तो केवल उनकी ही आज्ञा का पालन किया था, इसलिए शाप को केवल एक टांग तक सीमित कर दिया और शनिदेव को अनेकों आशीर्वाद दिये। माता पार्वती के इसी शाप के कारण ही शनि देव लंगड़ाकर चलते हैं।

शनि ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

शनि ग्रह की शापित दृष्टि जन्म पत्रिका के जिन भावों पर पड़ती है वहां विच्छेद, कष्ट और विघ्न की संभावना अधिक बढ़ जाती है साथ ही माता पार्वती के शाप के कारण लंगड़ाकर धीरे चलने से शनिदेव जन्म पत्रिका के जिस भाव में बैठे हों या दृष्टि गोचर करें उस भाव से संबंधित कार्यों में विलंब भी होता है। एक अन्य कथा के अनुसार शनिदेव की माता छाया भगवान भोलेनाथ की परम भक्ता थी, जब शनिदेव गर्भ में थे उस समय छाया को भगवान भोलेनाथ की पूजा और आराधना के कारण कई दिनों तक अपने खाने पीने की भी सुध नही रहती थी, जिसके कारण शनिदेव श्याम वर्ण के हो गये और जन्म के बाद सूर्य देव ने कहा तुम मेरे पुत्र नही हो और माता के छल के कारण शनिदेव को शाप भी दे दिया, कि तुम क्रूर

दृष्टि और मन्दगति से चलने वाले हो जाओ, इसी कारण शनिदेव सूर्य ग्रह से और सूर्य शनिदेव से शत्रुता रखते हैं।

शनि अशुभ ग्रहों में गिना जाता है। यह पूरे 24 घंटों में केवल 2 मिनट (angle वाले मिनट) चलता है, सभी नौ ग्रहों में सबसे धीरे चलता है। इसलिए यह विलम्ब का कारक ग्रह है, किसी भी कार्य में होनें वाले विलम्ब को दर्शाता है। एक राशि में लगभग 2½ वर्ष तक रहता है। कुण्डली में शनि शोक, दुःख, परेशानी और विलम्ब आदि को दर्शाता है। शनि ग्रह को शनि देव के नाम से भी संबोधित किया जाता है। परमपिता परमात्मा ने शनिदेव को तीनों लोकों का न्यायाधीश नियुक्त किया है, इसलिए आपके साथ न्याय यही ग्रह करेगा और उसी के अनुसार फल भी देगा। क्या फल, किस प्रकार का फल, क्या फैसला शनि देव आपको आपके कर्मों के अनुसार देगें इसका भय हमेशा बना रहता है। न्याय प्रिय होने के साथ ही शनिदेव अधिक परिश्रमी भी हैं, शनि सभी ग्रहों में सबसे धीरे चलने वाले ग्रह हैं, शनि को बारह राशियों की एक परिक्रमा करने में लगभग 30 वर्षों का समय लगता है, जबकि चन्द्रमा को लगभग 27 दिन लगते हैं, शनि एक राशि में लगभग ढ़ाई वर्ष तक रहते हैं, इसी कारण शनि की साढ़े साती और ढ़ैया (ढ़ाई वर्ष) लम्बे समय तक जातक को प्रभावित करती है। साढ़े साती और ढ़ैया दोनों की ही गणना चन्द्रमा से की जाती है। चन्द्रमा को ज्योतिष शास्त्र में मन और शनि को क्रूर ग्रह कहा गया है। अर्थ यह हुआ कि मन जोकि कोमल और भावुक है, एक क्रूर और निर्दयी ग्रह के प्रभाव में रहेगा और यदि शनि आपके अनुकूल नही है, तो शनि की ढ़ैया और साढे साती बहुत कष्ट दायक होती है।

शनि ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैंः-

1	कारक	संघर्ष
2	संबंध	भाई (छोटे/बड़े)
3	स्वभाव	क्रूर और पापी

4	गोत्र	कश्यप
5	दिन	शनिवार
6	वाहन	कौआ/गीध
7	रंग	कृष्ण/नीला
8	दिशा	पश्चिम
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी
10	लिंग	नपुंसक
11	वर्ण (जाति)	शूद्र
12	तत्व	वायु
13	स्वाद	कसैला (करेले का स्वाद)
14	धातु	लोहा
15	ऋतु	शिशिर/सभी मौसम
16	दृष्टि विशेष	3,7,10 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	तिल
18	शारीरिक अंग	स्नायु (मांसपेशी)
19	अन्न दान	उड़द
20	द्रव्य दान	तेल
21	विंशोत्तरी महादशा	19 वर्ष
22	जप संख्या	23,000
23	रत्न	नीलम, (संस्कृत में नील रत्न)
24	उपरत्न	नीली, जमुनिया (कटैला), लाजवर्त
25	सहचरी	नीला देवी
26	चरादि	स्थिर
27	समिधा	शमी (खिजरे की लकड़ी)
28	शनि के मित्र ग्रह	बुध, शुक्र, राहु
29	शनि के सम ग्रह	बृहस्पति

30	शनि के शत्रु ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, केतु
31	उच्च राशि	तुला (0° से 20° तक)
32	नीच राशि	मेष (0° से 20° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	कुम्भ (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	कुम्भ (21° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	मकर, कुम्भ
36	नक्षत्र स्वामी	पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद
37	शनि के आधी देवता	प्रजापति ब्रह्मा
38	शनि के प्रत्यधि देवता	यम
39	शनि ग्रह का कद	दीर्घ (लम्बा)
40	शनि ग्रह शुष्कादि में	शुष्क ग्रह